PAPER NAME

VARANASI.pdf

WORD COUNT

4088 Words

CHARACTER COUNT

13942 Characters

PAGE COUNT

13 Pages

FILE SIZE

429.9KB

SUBMISSION DATE

Apr 3, 2026 10:45 AM GMT+5:30

REPORT DATE

Apr 3, 2026 10:46 AM GMT+5:30

17% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

- 17% Internet database
- 0% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 0% Submitted Works database

Excluded from Similarity Report

- Bibliographic material
- Quoted material
- Cited material
- Small Matches (Less then 14 words)

वाराणसी शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

Ajay Kumar Yadav
Reasearch Scholar
Deptt. of Teacher Education
T.D.P.G. College, Jaunpur

Prof. Vinay Kumar Singh
Ex. Dean & Head
Deptt. of Teacher Education
T.D.P.G. College, Jaunpur

1.1 अमूर्त (Abstract) वर्तमान में प्रकृति के साथ कुछ ऐसा ही हो रहा है । प्रकृति ने हमें प्राकृतिक संसाधन जैसे वायु, जल, मृदा भूमि व खनिज पदार्थ आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराये है। परन्तु जनसंख्या वृद्धि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण एवं औद्योगिक विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में पर्यावरण की उपेक्षा आदि कार्यों से पर्यावरण के घटकों में कई प्रतिकूल परिवर्तन आये हैं। कहा जाता है कि प्रकृति हर ऐसी चीज का मनुष्यजात से प्रतिशोध लेती है जो प्रकृति की क्षय के लिए जिम्मेदार हो। पहले यह होता है। समस्या एक हल्के रूप में ली जाती थी परन्तु आजकल हमारे देश में प्रदूषण की समस्या के निवारण के लिए अनेक प्रयास किये जा रहें हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर के कलाएंव वाणिज्य विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

1.2 प्रस्तावनाः–

मनुष्य एक सर्वश्रेष्ठ बौद्धिक एवं सामाजिक प्राणी है। कालान्तर मे मनुष्य द्वारा शनैः शनैः सम्भता एवं संस्कृति के साथ ही साथ पर्यावरण का संरक्षण एवं विकास किया गया है। मनुष्य की इस अभूतपूर्व प्रक्रिया में शिक्षा का सर्वाधिक योगदान रहा है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को सुन्दर एवं आनन्दममी बनाती है। शिक्षा के अभाव में मानव प्रगति अवरुद्ध सी हो जाती है

और एक कुसमायोजित जीवन व्यतीत करने लगता है। पर्यावरण प्राकृतिक तत्वों एवं मानवीय क्रियाओं का एक अनुपम स्थान है, पर्यावरण संरक्षण एवं जागरुगता के अभियान को व्यापक सतर पर चलाने के लिए सम्पूर्ण समाज की जिम्मेदारी है, विद्यार्थी समाज का एक ऐसा सक्रिय सदस्य है जो आने वाले दिनों में समाज व देश का एक रीढ़युक्त सदस्य होगा यदि इनमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता जागृत कर दिया जाए तो लगभग हर परिवारों में उनके माध्यम से जागरूकता लाकर देश, समाज एवं राष्ट्र को पर्यावरतीय कुपोषक से बचाया जा सकता है।

1.3 प्रदूषण का अर्थ है– जब कोई वस्तु किसी अन्य अवांछित पदार्थों से मिलकर अपने भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुणों में परिवर्तन के आती हो तो वह प्रक्रिया या परिणाम दोनों ही प्रदूषण कहलाते हैं। अतः यह घातक प्रदूषण वायु, जल तथा मृदा को मानव उपयोग के किए हानिकारक हो जाती है।

यूनेस्को के अनुसार–''पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्ति, प्रकृति ऐव समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराते हुए पर्यावरण सुधार हेतु प्रेरणा प्रदान करती है।''

डॉ0 ए0बी0 सक्सेना के अनुसार :–'' पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण सम्बन्धी जानकारी व समय उत्पन्न करने की प्रक्रिया है। इसका सम्बन्ध मानव और उसकी क्रियाओ सके है। इसका उद्देश्य पर्यावरण व उसके घटकों के आवश्यक दायित्वपूर्ण दिशाओ के संरक्षण, सुरक्षा और संवर्धन करने का भी है''।

बी0लाल जैन के अनुसार– ''पर्यावरण प्रदूषण विज्ञान और प्रौद्योगिकी की देन है, महानगरीय जीवन की सौगात है, विशाल उद्योगों की समृद्धि का बोनस है, मानव को मृत्यु के मुंह में धकेलने की अनचाही चेष्टा है, रोगों को शरीर में प्रवेश करने का मौन निमंत्रण है और प्राणी के अमंगल की अप्रत्यक्ष कामना है''।

विश्वकोश के अनुसार –''पर्यावरण के अन्तर्गत उन सभी दशाओं, संगठन और प्रभावों को शामिल किया जाता है। जो किसी जीव अथवा प्रजाति के उद्भव, विकास एवं मृत्यु को प्रभावित करती है''। शिक्षा मानव जीवन के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। जब किसी राष्ट्र या समाज में परिवर्तन व जनचेतना की आवश्यकता का अनुभव हुआ है तब बुद्धिजीवी वर्ग की निगाहें शिक्षा पर ही आकर टिकी है। इसी को ध्यान में रखते हुये पर्यावरण रक्षा के लिए वर्तमान में पर्यावरणीय शिक्षा को प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम में विशेष स्थान दिये जाने पर जोर दिया जा रहा हैं। पर्यावरणीय रक्षा हेतु विश्वस्तरीय प्रयास भी किए गये हैं। अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का ध्यान इस ज्वलंत समस्या की ओर है । विश्व स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में रिपब्लिक ऑफ कोरिया में नेशनल काउन्सिल की स्थापना प्रकृति के संरक्षण के लिए की है। जो कि राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करने का कार्य सम्भालती है। पर्यावरण के अध्ययन के सन्दर्भ में यूनेस्को कार्य समिति (1970) तथा मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम (1972) में आयोजित हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी यही बात रखी गई कि पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम की सम्भावना को मूर्त रूप दिया जाये ।

यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन (1977) में पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया गया। जिसमें सभी स्तरो तथा औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के उद्देश्यों का विशिष्टीकरण किया गया । विश्वस्तरीय प्रयासों के साथ ही साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक नवीन संस्थाओं का गठन हुआ तथा समय–समय पर विभिन्न आयोगों ने भी पर्यावरणीय संरक्षण हेतु ''शामिल पाठ्यक्रम में भारतीय सांस्कृतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा को शामिल करने का सुझाव दिया। माध्यमिक स्तर पर एन.सी.ई आर. टी. द्वारा इस क्षेत्र में विशेष बल दिया जा रहा है। विभिन्न आयोगों के सुझावों के परिणाम स्वरूप पर्यावरणीय शिक्षा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर रखा गया है। माध्यमिक स्तर पर

निर्धारित पाठ्यक्रम के द्वारा एक निश्चित सीमा तक छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। 'डॉ० जाकिर हुसैन' चाहते थे कि पर्यावरण तथा उत्पादन कार्यों को सीखने के केन्द्रों के रूप में प्रयोग किया जाये। उनका कथन था कि गाँधीजी की बेसिक शिक्षा में सहसम्बन्ध के तीन केन्द्र है– प्राकृतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, हस्तकार्य। इन केन्द्रों का प्रयोग बालक की उच्चतम योग्यता को विकसित करने के लिए करना चाहिए। 'कोठारी शिक्षा आयोग (1964) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संस्तुति की गयी कि छात्रों को भौतिक तथा जैविक पर्यावरण के संन्दर्भ में जानकारी दी जानी चाहिए तथा विद्यालय के अध्ययन विषयों के साथ पर्यावरण अध्ययन को शामिल किया जाना चाहिए।

परन्तु निश्चय ही यह विचारणीय प्रश्न है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा को सम्मिलित करने के बाद भी उसके उद्देश्यों की प्राप्ति विफल रही है । इस असफलता का क्या कारण है? इसका अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण पाश्चात्यवाद एवं औद्योगिक विकास के फलस्वरूप हमारी संस्कृति का ह्रास है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों के बाद भी परिणाम नकारात्मक रहे तथा शिक्षित वर्ग को वातावरण के प्रति जागरूक बनाने में असफल हैं। भारतीय संस्कृति का ह्रास एवं आसुरी संस्कृति तथा भौतिकवाद का उदय ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता के उद्देश्यों की प्राप्ति में बाधक सिद्ध होता प्रतीत हो रहा है।

यद्यपि पर्यावरणीय जागरूकता एवं संस्कृति से सम्बन्धित अनेक शोध अध्ययन सम्पूर्ण विश्व यथा– फिड आदि अमेरिका, फ्रांस, इग्लैण्ड, रूस, अरब देश, पाकिस्तान, भारत, चीन, वियतनाम, इण्डोनेशिया, जापान, नार्वे, फिनलैण्ड आदि में सम्पन्न हुए, अनेक लेख भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं तथा

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संगोष्ठियों के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण के लिए चतुर्दिश प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें विद्यार्थियों एवं समाज को पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाना प्रमुख है । इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विभिन्न स्तरों यथा प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च, व्यवसायिक विशेष रूप में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु, पर्यावरण जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में यौन–भैद, सामाजिक–आर्थिक स्तर, शिक्षा स्तर, आवासीय संस्कृति (ग्रामीण. शहरी) आदि चरो के परिप्रेक्ष्य में अनेक • सर्वेक्षणात्मक एवं प्रयोगात्मक शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं ।

इस सन्दर्भ में शोधार्थी सीमित शोध अध्ययनों यथा हर्डी एवांक्स (1976), मैक्लवीने (1996), गुप्ता, दवे (1997), राय (2000), अनुदीपिका (2003) आदि को प्राप्त करने में समर्थ रही है। उक्त दर्शित विभिन्न शोधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर विदित होता है कि विभिन्न राष्ट्रों में उनके विशिष्ट सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कतिपय चर लेकर शोध कार्य सम्पन्न किये गये है। किन्तु इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन नही किया गया है कि बिषय वर्ग विद्यार्थी की पर्यावरण जागरूकता को किस सीमा तक प्रभावित करता है। उक्त परिसन्दर्भों में यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में क्या अन्तर है । उक्त यक्ष प्रश्न के उत्तर के परिप्रेक्ष्य में ही शोधार्थी ने निम्न शोध समस्या का चयन शोध के निमित्त किया है।

1.4 पर्यावरण और शिक्षा में सम्बन्ध

'पर्यावरण' तथा 'शिक्षा' शब्दों तथा इनके प्रत्ययों के अर्थ से यह स्पष्ट होता है कि दोनों में विकास को महत्व दिया जाता है। पर्यावरण में वातावरण को गुणवत्ता तथा शिक्षा में व्यक्ति की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जाती है। शिक्षा का विकास की प्रक्रिया कहते हैं तथा पर्यावरण में आन्तरिक तथा बाह्य सम्पूर्ण

परिस्थितियों को सम्मिलित किया जाता है, जो मनुष्य तथा अन्य जीवों की अभिवृद्धि तथा विकास को प्रभावित करती है। प्रत्येक जीव तथा प्राणी का अपना पर्यावरण होता है। मनुष्य का वातावरण भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक होता है। शिक्षा द्वारा इनकी गुणवत्ता के लिये लगातार परिवर्तन तथा सुधार भी किया जाता है जिससे बालकों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाया जा सके । मनुष्य तथा बालकों के व्यवहार परिवर्तन में वातावरण का विशेष महत्व है।

जे0बी0वाटसन –मनोवैज्ञानिक का विश्वास है कि वातावरण द्वारा बालक को जैसे चाहें वैसा बनाया जा सकता है। वंशानुक्रम का कोई महत्व नहीं है।

बनार्ड शॉ ने पर्यावरण तथा शिक्षा के सम्बन्ध को प्रदर्शित किया है शिक्षा की विकास की क्रिया का सम्पादन विद्यालय तथा कक्षा के अन्तर्गत होता है। कक्षा के अन्तर्गत शिक्षा तथा छात्रों के मध्य अन्तः प्रक्रिया होती है।

शिक्षक कक्षा के प्रकरण की सहायता से क्रियायें करता है जो शाब्दिक तथा अशाब्दिक होती हैं जिससे सामाजिक तथा भावात्मक वातावरण उत्पन्न होता है। छात्रों को नये अनुभव प्राप्त होते हैं तथा कुछ करने का अवसर मिलता है जिससे वे सीखते हैं तथा अपेक्षित वातावरण प्रस्तुत करते हैं। माता–पिता तथा अभिभावक अच्छी–शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश इसलिए दिलाना चाहते हैं, वहां उन्हें उत्तम प्रकार का वातावरण मिल सके। इस प्रकार शिक्षा के विकास की प्रक्रिया का सम्पादन, भौतिक, सामाजिक, ... सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण में होता है।

1.5 परिकल्पनाएँ (Hypothesis)

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।
- उच्चतर उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग की छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

1.6 प्रतिदर्श (Sampling) :–

शोध के सन्दर्भ में प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिदर्श चयन के निमित्त बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का उपयोग किया गया है। प्रथम स्तर पर यादृच्छिक चयन विधि द्वारा वाराणसी शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यालय का चयन किया गया है। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों में से कक्षा 11 एवं 12 में अध्ययनरत् 400 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों तथा उनकी संख्या को तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका

निर्धारित प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों का वितरण

क्र.सं.	समूह	कला वर्ग	विज्ञान वर्ग	योग
1	बालक	100	100	200
2	बालिका	100	100	200
	योग	200	200	400

सांख्यिकीय प्रविधियाँ (Statistical Methods)

शोध से सम्बन्धित एकत्रित प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन व टी– परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

1.7 परिणाम तथा विवेचन (Result & Explanation)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करने हेतु पर्यावरण जागरूकता परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक–विचलन तथा विभिन्न वर्गों के मध्य मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये टी–मान की गणना की गयी है जिसे तालिका–1 व तालिका–2 में दर्शाया गया है।

तालिका 1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का मध्यमान व मानक विचलन

विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मनक विचलन
400	38.97	4.983

तालिका 2

कला व विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के सांख्यिकीय मानों का विवरण

समूह		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	पी मूल्य
कला वर्ग	छात्र	100	37.50	5.50	छात्र–कला एवं विज्ञान वर्ग	1.941 (p<05)
	छात्राएँ	100	39.12	4.47	छात्रा–कला एवं विज्ञान वर्ग	0.538 (p<05)
विज्ञान वर्ग	छात्र	100	39.66	5.83	कला वर्ग छात्र एवं छात्रा	1.616 (p<05)
	छात्राएँ	100	39.56	3.68	विज्ञान छात्र एवं छात्रा	0.143 (p<05)
कुल	कला	200	38.31	5.05	कुल–कला एवं विज्ञान वर्ग	1.884 (p<05)
	विज्ञान	200	39.61	4.85		

तालिका–1 में प्रदर्शित मध्यमान के मान से (38.97) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता मध्यमान से उच्च स्तर की परिलक्षित हो रही है, अर्थात छात्र पर्यावरण को शुद्ध रखने के प्रति सचेत है। वही मानक विचलन का निम्न मान समूह में निम्न विचलनशीलता अर्थात

समूह में समजातीय को प्रदर्शित करता है । उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता औपचारिक, अनौपचारिक व सहज शिक्षा के साधनों से प्राप्त शिक्षा के कारण हो सकती है क्योंकि वर्तमान समय में पर्यावरण के गिरते स्तर के कारण विश्व समुदाय चिन्तित है तथा इसके . संरक्षण के लिए प्रत्येक प्रकार के साधनों का प्रयोग कर रहा है जिसमें जन संचार के माध्यम तथा पारिवारिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों में पर्यावरण स्वच्छता तथा प्रदूषण नियन्त्रण के तरीको को विकसित

करने के प्रति प्रयत्नशील रहते हैं । अतः इस कारण से इस समूह के विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता पायी गयी।

तलिका 2 में प्रदर्शित सांख्यिकीय दृष्टि से 0.05 स्तर पर भी असार्थक टी–मान इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पनाओं को स्वीकृत करते है। अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की तथा छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई अन्तर नहीं पाया गया। जबकि सामान्यतः यह तथ्य अधिकतर स्वीकृत किया जाता है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता अधिक पायी जाती है, क्योंकि उन्हें भौतिक पर्यावरण के विभिन्न घटकों का ज्ञान, विज्ञान विषय के अध्ययन के कारण हो जाता है। परन्तु तालिका में प्रदर्शित मान इस तथ्य को अस्वीकृत करता है क्योंकि वर्तमान में 10वीं कक्षा तक सामान्य विज्ञान का पाठ्यक्रम अनिवार्य है जिसके कारण कला वर्ग के विद्यार्थियों में भी कुछ सीमा तक वैज्ञानिक ''दृष्टिकोण, वैज्ञानिक चिन्तन तथा विज्ञान की विषयवस्तु का ज्ञान विकसित हो जाता है, साथ ही वर्तमान में माता–पिता अपने विज्ञान की बच्चों के विकास के प्रति अधिक सचेत व प्रयत्नशील होते हैं तथा बालक व बालिकाओं को समान शैक्षिक व पारिवारिक वातावरण प्रदान करते हैं, उनके विकास में व्यक्तिगत रुचि लेते हैं, जिसके करण समान शिक्षा, समान पारिवारिक वातावरण, माता–पिता के समान दृष्टिकोण के कारण बालक व बालिकाओं में सामान्य से उच्च पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता तथा अन्तर का अभाव दृष्टिगोचर होता है।

1.8 निष्कर्ष (Results).

पर्यावरण के गिरते स्तर ने विश्व समुदाय को चिन्तित कर दिया है इसी परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण हेतु सन् 1972 में स्टॉकहोम में अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक देश अपने लोगों में पर्यावरणीय शिक्षा के

माध्यम से पर्यावरण जागरूकता विकसित करें। अगर हम अपनी संस्कृति एवं वेदों, साहित्य पर दृष्टिपात करे तो भारत देश में सर्व मंगलम् व सर्वकुशलम् की संस्कृति तथा सामवेद में वर्णित मानव व प्रकृति के अटूट सम्बन्ध से पर्यावरण सुरक्षित व पल्लवित था। तो आज यह रहा है प्रश्न सहज प्रश्न उत्पन्न होता है कि आज इस पर्यावरणीय संकट काल में अपने अतीत की धरोहर से शिक्षा क्यों न ग्रहण करें तथा संस्कृति व धर्म का आधार लेकर पर्यावरणीय संकट के विकराल राक्षस का वध उद्धृत क्यों न करें) इसी तथ्य को दृष्टिगत कर शोधार्थी ने इस समस्या से पर्यावरण विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा की है। पर्यावरण जागरूकता को विकसित करने के लिए वेदों में उद्धरित श्लोकों के अर्थ को जानकर उसका प्रयोग करें। मानव व प्रकृति के मध्य प्राचीन सम्बन्ध को विकसित करें। प्रजातान्त्रिक, पारिवारिक व संस्कृति मूल्य का भी पर्यावरण जागरूकता पर प्रभाव पड़ता है । अतः पर्यावरण विशेषज्ञ पर्यावरण संरक्षण हेतु इन मूल्यों के विकास हेतु प्रयास करें तथा पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में अन्य साधनों के साथ इनका भी प्रयोग करें, तो पर्यावरणीय संकट को दूर करने में सहायता प्राप्त होगी ।

इस शोध से प्राप्त परिणाम शिक्षाविदों को चिन्तन के लिए अभिप्रेरित करता है कि वह उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा में धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य व पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य तथा संस्कृति का विकास करने हेतु पाठ्यक्रम का सृजन करें। पर्यावरणीय शिक्षा के पाठ्यक्रम में वेदों में उद्धरित श्लोकों का अर्थ तथा प्राचीन समय में मानव व प्रकृति के सम्बन्धों को वर्णित करें। भारतीय संस्कृति के भाव ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामया" जैसे मूल्य विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करे, क्योंकि वर्तमान पाठ्यक्रम छात्र व छात्राओं में उच्च पर्यावरण जागरूकता विकसित नहीं कर रहा है। अतः शोध के परिणामों को क्रियान्वित करने की चेष्टा की जाये तो पर्यावरणीय जागरूकता उच्च स्तर की

विकसित होगी। अतः पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता बालकों के अनिवार्य पाठ्यक्रम में इन मूल्यों को विकसित करने वाले पाठ्यक्रम का सृजन करें तथा शिक्षा नीति निर्धारण करते समय इन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन व पुर्ननिर्माण करे।

1.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. अनुदीपिका (2003) नगरीय एवं ग्रामीण, कला व वाणिज्य वर्ग के छात्रा एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन । अप्रकाशित एम. एड. लघु शोध प्रबंध, (शिक्षा), बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा ।
2. चौधरी, रेनू (2007) ''पर्यावरण अध्ययन एवं शिक्षण'' ज्ञान भारती प्रकाशन न्यू कॉलोनी, जयपुर ।
3. चन्द्रा, संस (2011) "पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य'' आर्य पब्लिकेशन नई दिल्ली, 1985।
4. गोयल, एम.के. (2005) ''पर्यावरण शिक्षा" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ।
5. गोपालकृष्णा, सरोजिनी (2016) "प्राथमिक शालाओं के बच्चों पर पर्यावरणीय शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन पी.एच.डी. शिक्षा ।
6. गोपाल सिंह, (1997) ''पर्यावरण शिक्षा' लायल बुक डिपो, मेरठ ।
7. जी.सी., महाचार्य (1996) ''बनारस के प्राथमिक स्तर की छात्राओं और उनमें अभिभावकों में पर्यावरण अवचेतना का अध्ययन' विनोद पुस्तक मंदिर आगराः ।
8. हुसैन, डॉ. मुहम्मद इरशाद, भारतीय परिप्रेक्ष्य में कर्मावरणीय शिक्षा डिपो, बेगल ब्रिजरोड, मेरठ।

9. जैन डॉ. दिल्ली दीप्ति ऐन वलवत संथ एंव राजा बलवन्त, पर्यावरण शिक्षा ऐन भारतीय परिप्रेक्ष्य, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
10. हुसैन, डॉ0 मुहम्मद इरशाद, भारतीय परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय शिक्षा, आर0लाल बुक डिपो, बेगम ब्रिजरोड, मेरठ।
11. जैन, डॉ0 दीप्ति एवं राणा बलवन्त, पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
12. पाण्डेय, डॉ0के0पी–पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
13. संयुक्त राष्ट्र, जलवायु परिवर्तन शिक्षा, संयुक्त राष्ट्र 2022 आनलाइन।
14. प्रवीण, एच0, नसरीन, एन,–भारत में माध्यमिक विद्यालय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा की स्थिति, 2016, आनलाइन।
15. गुप्ता, डॉ0एस0पी0 एवं गुप्ता, डॉ0 अलका : पर्यावरण शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, 2023।

17% Overall Similarity

Top sources found in the following databases:

- 17% Internet database
- Crossref database
- 0% Submitted Works database
- 0% Publications database
- Crossref Posted Content database

TOP SOURCES

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1	**tspmt.com** Internet	13%
2	**jetir.org** Internet	2%
3	**socialresearchfoundation.com** Internet	2%
4	**digital.lib.usu.edu** Internet	<1%